प्राक्कथन

मेरे इस शोध–प्रबन्ध में भारतीय परम्परा से प्राप्त मानवीय–जनतांत्रिक मूल्य को आलोचना को आधार बनाया गया है । यह कहा जा सकता है कि बीसवीं शताब्दी विविध सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्य परिवर्त्तन का काल है, जिसका प्रभाव साहित्य पर पड़ रहा है । साहित्य और जनजीवन अभिन्न रहता है । इन दोनों का संबध अन्योन्याश्रित होने के कारण जैसे दूध और पानी को मिला देने पर उन्हें अलग नहीं किया जा सकता ठीक उसी तरह समाज और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू है । साहित्य किसी न किसी रूप से उसकी परम्पराओं धारणाओं आदर्शों मान्यताओं, रीतिरिवाजों आदि से जुड़ा रहता है । जीवनगत बदली हुई परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ता है । उन्नीसवीं शताब्दी में हुए सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलनों ने जिन नवीन मूल्यों की सृष्टि की, फलतः आधुनिक जीवन मूल्य–संक्रमण का युग है, इसलिए समकालीन कहानी के विवेचन में उसी दृष्टिकोण को प्रमुख रूप से स्वीकार किया गया है । समकालीन कहानी के विकास यात्रा में मानवीय–जनतांत्रिक का योगदान किस तरह से हो रहा है, इसका विस्तृत विवेचना ही हमारे शोध का लक्ष्य है । समकालीन जनवादी कहानी मानवीय–जनतांत्रिक मूल्य को लेकर चलती है । प्रजातांत्रिक संस्कारों का प्रभाव अंततः राजनीतिक संरचना तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि परिवारिक और सामाजिक संरचनाओं तक फैला है । इस प्रभाव को समकालीन जनवादी कहानीकारों ने ईमानदारी से उद्घाटित किया है । जिसे प्रस्तुत करना ही इस शोध का उद्देश्य है । विशेष अध्यन के अन्तर्गत मैनें उन्हीं कहानीकारों का विस्तृत विवेचना किया है जिन्होंने मानवीय –जनतांत्रिक मूल्य–विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है ।

वर्तमान युग में धार्मिक रूढ़ियों के पुनरूत्थान और वैज्ञानिक प्रगति से उत्पन्न भोगांकांक्षा आदमी और आदमी के बीच स्वार्थ की दीवार खड़ी कर रही है । संकट की घड़ी में मानवीय–जनतांत्रिक मूल्य के आधार पर कहानी के विकास का अध्यन कहानी के क्षेत्र में अनुसंधान के नये गवाक्ष खोल सकता है ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का सारा श्रेय पूज्य गुरूवर डा0 शंभुनाथ जी को है । उन्होंने अपने निर्देशन के द्वारा अनेक अमुल्य सुझाव दिये । प्रस्तुत शोध प्रबंध में जो भी अच्छाइयाँ हैं, उन्हीं की है । और जो भी कमियां हैं वो मेरी है । टंकन कार्य में प्रियवर श्री राम नरेश जी ने रूचिपूर्वक जो परिश्रम किया, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

पिंकी जायसवाल

पिंकी जायसवाल

विषयानुक्रमणिका

समकालीन कहानी में मानवीय और जनतांत्रिक मूल्य

मेरे शोध प्रबंध के कुल 6 अध्याय होंगे, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–––––––

पृष्ठ - संख्या

पहला अध्याय :– मानवीय और जनतांत्रिक मूल्यबोध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि । 1 – 60

(01) मूल्य क्या है ?

(02) मानवीय मूल्य की पृष्ठभूमि

(03) मानवीय मूल्य क्या है ?

(04) साहित्य और मूल्य

(05) प्रजातांत्रिक नियोजन (संविधान में जनतांत्रिक मूल्यों का महत्व)

(06) जनतंत्र और जनवाद क्या है ?

(07) जनवाद तथा जनतांत्रिक मूल्य क्या है ?

(08) मानवीय मूल्य तथा जनतांत्रिक मूल्यों में अंतर

(09) मानवीय मूल्य का आधुनिक संदर्भ में महत्व

(10) मानवीय तथा जनतांत्रिक मूल्यों को प्रभावित करने वाली अभिवृत्तियाँ

(11) राष्ट्रीय एकता और मानवीय जनतांत्रिक मूल्य ।

द्वितीय अध्याय :– मानवीय और जनतांत्रिक मूल्यबोध का आधुनिक विकास । पृ॰सं – 61 – 89

(क) नवजागरण और मानवीय–जनतांत्रिक मूल्य

(01) नवजागरण क्या है ? (काल 1801–1915)

(02) नवजागरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(03) नवजागरण के प्रमुख अग्रदूत और उनके प्रमुख विचार

(04) नवजागरण काल में सामंतवाद तथा साम्राज्यवाद से संघर्ष के प्रमुख बिन्दु

(05) उल्लेखनीय मानवीय आदर्श और उल्लेखनीय जनतांत्रिक आदर्श (मूल्य)

॥ख॥ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और मानवीय जनतांत्रिक मूल्य ॥सन् 1920 से 1936 तक॥

तृतीय अध्याय :- 47 पूर्व हिन्दी-कथा-साहित्य में मानवीय जनतांत्रिक मूल्य । पृ. सं - 90-127

॥क॥ प्रेमचंद - प्रसाद युग की कहानियों में मानवीय जनतांत्रिक मूल्य

॥ख॥ प्रगतिवादी कथा-साहित्य में मानवीय-जनतांत्रिक मूल्य

॥ग॥ 47 पूर्व की कहानियों में मानवीय-जनतांत्रिक मूल्यबोध की सीमाएँ

चतुर्थ अध्याय -:स्वातंत्र्योत्तर आधुनिक कहानियों में मानवीय-जनतांत्रिक मूल्य । पृ-सं - 128-227

॥क॥ स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक परिस्थितियों में मानवीय-जनतांत्रिक मूल्य

॥ख॥ नई कहानी

॥01॥ नई कहानी क्या है ?

॥02॥ नई कहानी की नई सृजनात्मकता तथा संवेदनशीलता से संबंध

॥03॥ मानवीय मूल्यों के संबंध में नये कहानीकारों की धारणा

॥04॥ आधुनिकतावाद

॥05॥ आधुनिकतावादी धारा, की तरह कुछ महत्वपूर्ण कहानियों के आधार पर मानवीय मूल्यों का विवेचन

॥06॥ प्रगतिशील धारा की कुछ महत्वपूर्ण कहानियों में जनतांत्रिक मूल्य का विवेचन

॥07॥ नई कहानी की उपलब्धियाँ और सीमाएँ ।

॥ग॥ साठोत्तरी कहानी

॥01॥ साठोत्तरी कहानी से तात्पर्य

॥02॥ कहानियों के परम्परागत विधान का विध्वंस

॥03॥ अकहानी का युग

॥04॥ अकहानी की उपलब्धियाँ

॥05॥ अकहानी की सीमाएँ

॥06॥ वैचारिक तत्व- निषेधवाद, अराजकतावाद, मूल्यहीनता

(07) शिल्पहीनता, अनुक्रमहीनता

(08) कथावस्तु और चरित्र का विलोप, घटनात्मकता का निषेध

(09) साठोत्तरी कहानीकार

(10) साठोत्तरी कहानी और जनवादी चेतना

(ग) समकालीन जनवादी कहानी

(01) सामाजिक संदर्भो में मूल्यगत परिवर्त्तन

(02) जनवादी कहानी की भूमिका

(03) समकालीन जनवादी कहानी पृष्ठभूमि तथा नामकरण

(04) प्रवृतियाँ

(05) उपलब्धियाँ

(06) सीमाएँ

पंचम अध्याय :– विशेष अध्यन । पृ॰ सं॰ – 228 – 339

(क) भीष्म साहनी

(ख) शेखर जोशी

(ग) काशीनाथ सिंह

(घ) रमेश उपाध्याय

(ड.) संजीव

षष्ठ अध्याय :– पृ॰ सं – 340 - 382

मानवीय–जनतांत्रिक मूल्यबोध —— सामान्य उपलब्धियाँ और निष्कर्ष ।

(01) कहानी के विकास यात्रा में मानवीय–जनतांत्रिक मूल्य का योगदान – उपलब्धियाँ